युनिट-1 यशपालः-व्यक्तित्व और कृतित्व

- जीवन परिचय
- रचना परिचय
- रचनीत्मक वैशिष्ट
- यशपाल एक परिचय
  जन्म-3दिसम्बर,1903 पंजाब के फिरोजपुर छावनी में खत्री परिवार
- माता -श्रीमती प्रेमदेवी, पिता-हीरालाल
- साधारण परिवार, छोटी दुकान ईसलिए लाला से जाने जाते थे।
- माता ने यशपाल तथा धर्मपाल दोनों को आर्यसमाज के स्कूल
- गरीबी के प्रति घृणा के कारण रचनात्मकता
- अंग्रेजों के दमन की कहानियॉ सुनकर स्वाधीनता की ओर
- कच्ची सड़क पर चलने पर मजबूर,बरसात में छाता के साथ अंग्रेज के सामने न चलने जैसी कहानियों ने क्रातिकरि को जन्म दिया
- मॉ के द्वारा पिटा जाने वाला प्रसंग-कारखाना,अंग्रेजों का बंगला
- जब 4साल के थे तब मेडम की मुर्गियों को छेड़ा तो गालीगलोज़

मातृप्रेमी पुत्र यशपाल की माता का लालन पालन एक सभ्य एवं संस्कारी परिवार में हुआ था।प्रेमदेवी साहसी,परिश्रमी स्त्री थीं। आर्थिकविपन्नता में शिक्षा के खर्च तथा संतान के विकास को लक्ष्यमें लेकर पति के साथ को छोड़कर फिरोजपुर पहुँच गयी।प्रेमदेवी ने फिरोजपुर में अध्यापिका कार्य कर नवीन प्रणाली का साहस दिखाया।

यशपाल जी ने माँ की व्यस्तता को देखते हुए छोटे यशपाल ने स्कूल से जाने पहले चौका-बर्तन तथा दूर से पानी लाने कि जिम्मेदारी उठाकर मातृप्रेमी पुत्र की रूप दिखाया।

शिक्षा-दीक्षाः-आठ वर्ष की अवस्था में शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी में करवाई जो उनकी अभिरूची के अनुकूल थी।क्योंकि जब वह पाँच साल की आयु में अपने संबंधी के घर गये तो पास में अंग्रेज परिवार की मुर्गियों को छेड़ा तो मैम साहब की फरियाद की बदौलत माँ की छड़ी से मार पड़ी तब से अंग्रेजों के प्रति घृणा जागृत हुई थी जिसे यहाँ मदद मिली।

संग्रहणी रोग के कारण गुरूकूल के संस्थापको के चहेते यशपाल को ज्यादा सुविधा प्रदान करने कारण दूसरे विद्धार्थी के ईर्षा का शिकार बने तब ताना मुक्ति हेतु मक्खन-मलाई न खाने का निश्चय किया

रोग से मुक्ति न मिलने के कारण 14 की अवस्था में गुरूकूल छोड़ लाहौर की डी.ए.वी. स्कूल में दाखिल हो गए।

फिरोजपुर छावनी में रात्री समय अछूत बालकों को स्वयं सेवक के रूप में पढ़ाने का काम करते थे। यहाँ ही उनका परिचय लाजपतराय सें हुआ। उनकी सहायता से विदेशी कपड़ो की होली जलायी।

12मैट्रीक परीक्षा समाप्त होते काँग्रेसे सेवक बन गाँव-गाँव भाषण दिय़ा और राजकीय उत्साह दिखाया।

सन्1921 में गांधीजी ने चौरी-चौरा कांण्ड के कारण असहयोग आंदोलन स्थगित किया तो हताश यशपाल क्रांतिकारी प्रवृत्तियों
की ओर झुके।

क्रांतिकारी जीवन-1921 में, असहयोग आंदोलन के समय यशपाल अठारह वर्ष के नवयुवक का गाँधीवाद से यशपाल के तात्कालिक मोहभंगमैट्रिक के बाद लाहौर आने पर यशपाल नेशनल कॉलेज में भगतसिंह, सुखदेव और भगवतीचरण बोहरा के संपर्क में आए।

- भगतसिंह उनके बाल सखा,सुखदेव, और चन्द्रशेखर आदि ने सन्1928 में हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ की स्थापना
- 1928 में लाला लाजपराय पर लाठी प्रहार करने वाले इन्सस्पेक्टर जे.पी.सैण्डल का वध कर राष्ट्रीय अपमान का बदला लिया।
- बैंक में डकैती की योजना में भी सहयोग दिया जिससे क्रांतिकारी योजना को पुरा सकें।
- बम कांड में उनका सबसे बड़ा सहयोग-जिसमें 4अप्रैल,1929 के दिन विधान सभा में हिंदुस्तान जनमत के विरोध के बावजूद सार्वजनिक सुरक्षा के बिल विरोध के हेतु भगतसिंह

ने फैका जिसमें यशपाल जी का अप्रत्यक्ष साथ दिया।

- बम बनाने में माहिर यशपाल ने क्रांतिकारी प्रवृत्तियों को गति देने के लिए लाहौर में बम फैक्ट्री लगायी। खुफिया पुलिस ने फैक्ट्री पकड़ी तब वेश बदलकर कांगड़ा पहुँचे। लाहौर में उनकी गिरफ्तारी पर ईनाम रखा गया।
- कांगड़ा से कलकत्ता से काश्मीर नाम व वेश बदलकर बम के कार्य में लगे रहे।
- रोहतक में किसना नाम से बम बनाये तथा अपनों संघर्ष करते रहे

सन् 1929 में वायरस की गाड़ी के नीचे बम बिस्फोट का दुस्साहस किया।

- आर्थिक समस्या सशर्त 50,000 रूपये सावरकर के बड़े भाई बाबासाहब ने मुस्लिम नेता जिन्ना की हत्या करने के बदले देने के लिए कहा लेकिन अपने समाजवाद केसिद्धांत के विरूद्ध होने के कारण अस्वीकार कर दिया।

प्रकाशवती से परिचयः-एक समृद्ध कपूर परिवार की लाड़ली बेटी क्रांति के कंटीले रास्ते पर चलकर राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रीय भूमिका निभाई। क्रांतिकारी यशपाल के परिचय उनके पिताजी को क्रोध में घर से निकल जाने के आदेश से घर छोड़ यशपाल के क्रातिकारी दल में सम्मिलित हो गई। दोनों का यही परिचय विवाह में परिणित हुआ। -

- सन्1932 में पुलिस की मुठभेड में गिरफ्तार कर लिए गए और 14 वर्ष की सजा दी गई। ईन्हीं संघर्षपूर्ण दिनों में बड़ा साथ मिला।जेल से एक अच्छे साथी से विवाह कर लेने की सलाह दी तब प्रकाशवती ने बरेली के मजिस्ट्रेट को कैदी यशपाल से विवाह करने का प्रस्ताव रखा तब दूसरे दिन यही प्रस्ताव यशपाल के पास रखा गया तब उन्होंने स्वीकृति दी
- 7अगस्त1936 के दिन जेल में प्रकाशवती से विवाह हुआ
- उनके विवाह ने एक कानून की एक धारा बढा दी,कि जेल में कैदियों का नहीं हो सकेगा।
- लेखक यशपाल का श्रेय प्रकाशवति को।

प्रकाशवति की अग्नि परीक्षाः- पति की जेल की लम्बी सजा समय उनके जीवन में संघर्षपूर्ण दिन।

- सुंदर देखाव,अकेले में लोगों की विकृत नज़र से बचना,
- पति की जेल मुक्ति के बाद की आर्थिक स्थिति में सहयोग मिट्टी-कागज का खिलौने बनाए,सड़क पर की सुतलिया एकट्ठी कर थेले बनाकर गुजारा किया और समाज के सामने आदर्श दाम्पत्य जीवन का उदाहरण प्रस्तुत किया।
- यशपाल जी प्यार से प्रकाशवति को रानी कहते थें।

•**यशपाल जी की मृत्युः**-26 दिसम्बर 1976 के दिन अंतिम साँस

- अस्वस्थता तथा हृदय रोग से पिछले 10साल से पीड़ित

•अंतिम समय पुत्र आनंद की पत्नी की उपस्थिति में अंतिम साँ

•राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार। प्रकाशवति के शब्दों में-"<u>आज उनकी याद में उनके अस्थि-कलश को उन्हीं के उद्यान में स्थापित कर उनकी राख को चारों और की मिट्टी में मिला दी गई है।यह बगीचा,यह फूल-पौधे यशपालमय हो गए है।"</u>